ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एनो मा नि गाम्।

अथर्व. 5/3/4

हे प्रभो! मैं पापी न बनूं।

O God! I should never become a sinner.

वर्ष 42, अंक 31 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 24 जून, 2019 से रविवार 30 जून, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अमर वीरांगना रानी दुर्गावती की पुण्यतिथि (24 जून) पर विशेष

अकबर को रानी दुर्गावती का करारा जवाब

दुर्गावती नाम था उसका। साक्षात दुर्गा थीं वह वीरांगना। बुंदेलखंड के प्रसिद्ध चंदेल राजपूतों में जन्मी रानी दुर्गावती का वंश इतना उच्च माना जाता था कि चित्तौड़ के महाराणा संग्रामसिंह (राणा सांगा) की बहन भी इस वंश में ब्याही थी। दुर्गावती का विवाह हुआ था, गोंड राज परिवार में। विवाह के कुछ ही वर्षों के पश्चात दुर्गावती को एक पुत्र हुआ था जिसका नाम वीर नारायणसिंह रखा गया।

वीर नारायण अभी बालक ही था कि दुर्गावती के पति की मृत्यु हो गई। उस अराजक मुस्लिम युग में एक जवान, सुंदर विधवा हिन्दू रानी को कौन चैन से रहने देता। दुर्गावती का राज्य तीन ओर से मुस्लिम राज्यों से घिरा था। पश्चिम में था निमाड़-मालवा का शुजात खां सूरी, दक्षिण में खानदेश का मुस्लिम राज्य और पूर्व में अफगान। तीनों ने असहाय जान दुर्गावती के राज्य पर हमले प्रारंभ कर दिए। दुर्गावती घबराई नहीं। उस राजपूत बाला ने गोंडवाने के हिन्दू युवकों को एकत्र कर एक सेना तैयार की और स्वयं उसकी कमान संभाल तीनों मुस्लिम राज्यों का सामना किया।

दुर्गावती ने तीनों मुस्लिम राज्यों को बार-बार युद्ध में परास्त किया। पराजित मुस्लिम राज्य इतने भयभीत हुए कि उन्होंने गोंडवाने की ओर झांकना भी बंद कर दिया। इन तीनों राज्यों की विजय में दुर्गावती को अपार संपत्ति हाथ लगी

सन् 1564 का वर्ष था। भारत के सारे हिन्दू राजे-रजवाड़ों ने इस्लाम के सम्मुख सिर झुका दिया था। बचे थे मात्र उत्तर भारत के चित्तौड़ और गोंडवाने के राज्य व दक्षिण भारत के विजय नगर का साम्राज्य।

लूटमार-आगजनी करती बढ़ी चली आ रही मुगल फौजों का सामना किया दुर्गावती ने गढ़ा-मंडला के मैदान में। अपने 20 हजार घुड़सवारों और 1 हजार हाथियों के साथ दुर्गावती मुगल फौज के सामने आ डटी। दुर्गावती के घुड़सवारों के पास न जिरह-बख्तर थे न घोड़ों पर। इधर मुगल सैनिक सिर से कमर और हाथों तक लोहे के कवच से सुरक्षित थे। फिर 20 हजार हिन्दू घुड़सवारों के सामने 50 हजार की विशाल मुगल सेना थी।

आसफ खां ने अपने दाएं-बाएं के 10 हजार सवारों को घूमकर दुर्गावती की फौजों के पार्शव से तीर बरसाने का हुक्म दिया। सामने से 10 हजार घुड़सवार हिन्दू फौजों को दबाने में लगे। तीन ओर के हमले से हिन्दू सैनिक परेशान हो उठे, तब दुर्गावती अपने 1 हजार हाथियों के साथ मुगलों की मध्य सेना पर टूट पड़ी। एक विशाल हाथी पर दुर्गावती सवार थी। चारों ओर थे उसके अंगरक्षक घुड़सवार। पास ही एक अन्य हाथी पर 18 वर्षीय वीर नारायण मां की सहायता कर रहा था। दोपहर बाद प्रारंभ हुए इस युद्ध में 2-3 घंटे की लड़ाई के बाद दोनों ओर के सैनिक थककर चूर हो गए। तब संध्या 4 बजे आसफ खां ने अपने ताजा दम 20 हजार घुड़सवारों को हमले का हुक्म दिया। थके हिन्दू सैनिक इन तरोताजा घुड़सवारों का सामना नहीं कर पाए।

सैनिक मरते गए और कतारें टूट गई। बढ़ते मुगल सैनिकों ने दुर्गावती और उनके पुत्र वीरनारायण को घेर लिया। दोनों हाथियों की रक्षी कर रहे हिन्दू अंगरक्षकों की पंक्तियां भी टूटने लगीं। अब मां-बेटे पूरी तरह घिर चुके थे किन्तु क्रोध से उफनती शेरनी दुर्गा मुगलों के लिए काल बन गई। दुर्गावती के धनुष से चले तीर मुगलों के कवच चीर उन्हें मौत की नींद सुलाने लगे। उधर मुगलों के बाण की वर्षा से वीर नारायण घायल हो गए। लेकिन मां के वीर बेटे ने रणक्षेत्र नहीं छोड़ा। वह घायल होने के बाद भी मुगलों पर तीर बरसाता रहा। तभी दुर्गावती ने अपने महावत को वीरनारायण के हाथी के पास अपना हाथी ले चलने का आदेश दिया। रणक्षेत्र में अटे-पड़े मुगल घुड़सवारों के बीच से लड़ती-भिड़ती दुर्गावती अपने बेटे के पास पहुंची और वीरनारायण से पीछे हटकर चौरागढ़ चले जाने को कहा। वीर बालक हटने को तैयार नहीं था।

बड़ी समझाइश के बाद उसके अंगरक्षक उसे रणक्षेत्र से निकाल ले जाने में सफल हुए। इधर दुर्गावती चट्टान बनी मुगलों का मार्ग रोके रही। अंधेरा घिरने लगा था और दोनों ओर के सैनिक पीछे हटकर अपने शिविरों को लौटने लगे थे। मृतकों की देह रणक्षेत्र में ही पड़ी रही और घायलों को उठा-उठाकर शिविर में लाया जा रहा था। दुर्गावती ने रात्रि में ही बचे-खुचे सैनिकों को एकत्र किया।

कुछ तो मारे गए थे, लगभग 10 हजार घुड़सवार वीरनारायण के साथ चौरागढ़ चले गए थे। कुल 5 हजार घुड़सवार और 500 हाथी दूसरे दिन के युद्ध के लिए शेष बचे थे। पराजय निश्चित थी। यह देख दुर्गावती ने अपने पुत्र

- शेष पृष्ठ 7 पर

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के अवसर पर चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, ईस्ट आफ कैलाश नई दिल्ली में

पदम्भूषण महाशय धर्मपाल जी ने किया बालिकाओं के साथ योग

21 जून, 2019, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर भारत सहित संपूर्ण विश्व में योग के विशाल-विराट आयोजनों के विहंगम दृश्य पूरी दुनिया में दिखाई दिए, जो कि आर्य समाज तथा भारत की वैदिक परंपरा के लिए एक गौरव की बात है। इसी दिन भारत की दिव्य महान विभूति पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली की बालिकाओं के साथ योग किया। इस अवसर पर श्रीमती श्रीबाला चौधरी, श्री नितिज्जय चौधरी, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य उपस्थित रहे। महाशय जी की नियमित दिनचर्या, अनुशासित और व्यवस्थित आचरण और ताजगी पूर्ण मधुर व्यवहार मानवमात्र के लिए अनुकरणीय है। महाशय जी ने अपने आशीर्वचनों में कहा कि "करें योग, रहें निरोग" प्रत्येक व्यक्ति को अपने सुखमय जीवन के लिए योग करना ही चाहिए। यह तो केवल एक प्रतीक पर्व के रूप में विशेष दिन है। लेकिन प्रतिदिन योग करने का नियम बनाएं और अपना जीवन सफल बनाएं।

वेद-स्वाध्याय

लक्ष्मी का ग्रहण

एता एना व्याकरं खिले गा विष्ठिताइव।
रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम्।। *अथर्व० 7/115/4*
ऋषिः अथर्वाङ्गिराः।। देवता - सविता।। छन्दः अनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - एताः =इन **एनाः** =उन [अपने घर या जीवन में रक्खी हुई सैकड़ों प्रकार की] लक्ष्मियों का **व्याकरम्** = मैं विवेकपूर्वक पृथक्करण करता हूँ **खिले विष्ठिता गाः इव** = जैसे व्रज में विविध प्रकार की आ बैठी हुई गौओं का गोपाल पृथक्करण किया करता है। अब **याः पुण्याः लक्ष्मीः** = जो पुण्या लक्ष्मी हैं, पुण्य कमाई के ऐश्वर्य हैं **रमन्ताम्** = वे मेरे यहाँ रमण करें, आनन्द से रहें, पर **याः पापीः** = जो पाप-कमाई की लक्ष्मी हैं **ताः** = उन्हें मैं आज **अनीनशम्** = विनष्ट किये देता हूँ।

विनय - मेरे घर में सैकड़ों प्रकार की लक्ष्मी, ऐश्वर्य की वस्तुएँ रखी हुई हैं, किन्तु जबसे मुझे ज्ञान हुआ है कि मुझे पाप की कमाई का परित्याग कर देना चाहिए और ऐसी पापलक्ष्मी का सेवन मेरा विनाश कर देगा, तबसे मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं अब पापलक्ष्मी को घर में नहीं रखूँगा। इस प्रयोजन के लिए आज मैं अपनी एक-एक वस्तु का निरीक्षण करने लगा हूँ। जैसे गोपाल व्रज में इकट्ठी हुई गौओं को पृथक्-पृथक् पहचानता है कि ये अपने घर की गौएँ हैं और ये नहीं, उसी तरह मैं अपने सब सामान को-पुस्तक, पलङ्ग, कुर्सी, सन्दूक, कीमती वस्त्र, वहाँ का रुपया, उधर से आया, जेवर, कोठी, खेत, जायदाद आदि एक-एक वस्तु को-पृथक्-पृथक् विभक्त कर रहा हूँ कि ये-ये बिलकुल उचित कमाई की वस्तुएँ तो ठीक हैं, किन्तु यह रिश्वत में आयी वस्तु, यह छल-कपट से पायी जायदाद, दुर्बल को सताकर मिला यह धन, गरीबों के पेट को काटकर बने ये बहुमूल्य कपड़े, इन सबको मैं आज विनष्ट कर दूँगा, इन्हें मैं अपने पास नहीं रख सकता।

जन्म से ही मैं सैकड़ों प्रकार की दैवी या आसुरी सम्पदों को साथ लेकर आया हूँ, पैदा हुआ हूँ, किन्तु आज मैं उनका विवेकपूर्वक पृथक्करण करने में प्रवृत्त हुआ हूँ। जो मेरे हृदय में 'अभय', सत्त्वसंशुद्धि, ज्ञान, योगस्थिति आदि दैवी सम्पद् हैं, पुण्यलक्ष्मी हैं, उन्हें तो मैं कहता हूँ कि "तुम मुझमें रमण करो, आनन्दपूर्वक रहो", किन्तु जो दम्भ, दर्प, अभिमान, क्रोध, पारुष्य, अज्ञान आदि आसुरी सम्पद् हैं, पापलक्ष्मी हैं, उन्हें अपने हृदय-मन्दिर में से निकल जाने को कहता हूँ, उन्हें मैं अपने मनोराज्य में नहीं रहने दूँगा।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बिहार में संवेदनाओं का अकाल

भारत एक विशाल जनसँख्या बहुल देश है। प्राकृतिक आपदाओं समेत अन्य हादसे होना यहां कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन जब राजनीतिक हादसे हो या लापरवाही तो प्रश्न खड़े करना एक आम आदमी का अधिकार भी है और उसका कर्त्तव्य भी। हाल ही में बिहार के मुजफ्फरपुर में 181 से अधिक मासूम बच्चों की मौत के बाद भी बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार समेत देश के सभी नेताओं की चुप्पी बरकरार है। जबकि टीम इंडिया के बल्लेबाज शिखर धवन की अंगुली में चोट लगने पर प्रधानमंत्री समेत देश के अनेकों दिग्गजों ने संवेदना प्रकट की लेकिन मुजफ्फरपुर मे चमकी नामक बुखार से पीड़ित बच्चों की मौत पर किसी ने संवेदना प्रकट करना उचित नहीं समझा।

पिछले एक हफ्ते से ज्यादा समय से बिहार में चमकी बुखार ने जो तांडव मचाया है उससे सेंकडों परिवारों के घरों के चिराग बुझ गये हैं। हालात यहां तक बताये जा रहे हैं कि पिछले कई दिनों में अस्पतालों से ठीक होकर घर वापस जाने के बजाय बच्चे मर कर ही वापस गए हैं। ऐसा नहीं है कि बिहार सरकार पहली बार इस बीमारी का सामना कर रही हो बल्कि इससे पहले भी या हर साल यह बीमारी अपना मुंह खोलकर मासूमों को अपना निवाला बनाती है। किन्तु अभी तक सरकार ने इस पर कोई बड़े व्यापक कदम नहीं उठाये। किसी तरह क्रिकेट मैच व अन्य गैर जरुरी मुद्दों से निकली मीडिया ने जब इस पर सवाल उठाया तो उल्टा उसी पर सवाल उठने लगे। मुख्यमंत्री नितीश कुमार से लेकर बिहार के उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी इतनी बड़ी त्रास्दी पर चुप हैं और पत्रकारों के चमकी बुखार को लेकर सवाल करने पर उन्हें बाहर जाने के लिए कह देते हैं।

यहाँ तक किसी दलित और मुस्लिम के साथ हुए कथित भेदभाव को लेकर संसद तक शोर मचा देने वाला विपक्ष भी इस पर मौन है। बिहार में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव भी दिखाई नहीं दे रहे हैं। प्रश्न यह भी है कि आखिर इतनी बड़ी त्रासदी पर सारे राजनेता मौन क्यों हैं? क्या मौन की एक वजह इन नेताओं की आत्मग्लानि समझी जाये क्योंकि ये जवाब देने की स्थिति में नही हैं। पिछले एक दशक से ये बीमारी मुजफ्फरपुर के हजारों बच्चों को लील गई लेकिन उसका कोई इलाज आज तक नहीं निकला। देखा जाये बिहार में नीतीश कुमार सरकार के 14 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। नितीश सरकार तो इसके लिए जिम्मेदार है लेकिन विपक्ष भी अपनी भूमिका से बच नहीं सकता। इस बीमारी ने एक बार फिर नेताओं की पोल खोल के रख दी है।

इन मौतों के लिए पहले लीची को जिम्मेदार ठहराया गया फिर कहा गया नहीं गरीबी और कुपोषण की वजह से बच्चों की मौत हो रही है। यदि यह मौतें कुपोषण की वजह से हो रही हैं तो इसके लिए कोई और नहीं बल्कि जिम्मेदार सरकार ही है क्योंकि बच्चों को कुपोषण से बचाने के लिए केंद्र और राज्य सरकार कई योजनाएं चला रही है। उसके लिए करोड़ों का बजट है, समाज कल्याण विभाग का एक भारी भरकम अमला है, गाँव और ब्लॉक स्तर पर आंगनवाड़ी सेविकाएँ है, बाल विकास परियोजना से हर एक जिले में अधिकारी नियुक्त होते हैं। यदि फिर भी भूख और कुपोषण से बच्चों की मौत हो रही है तो इन पर भी सवाल उठने चाहिए। गरीब और कुपोषित बच्चों का निवाला कहीं भ्रष्ट अधिकारियों के जेब में तो नहीं जा रहा है? इसकी भी पड़ताल जरुरी है।

हालाँकि राज्य सरकार की तरफ से कई तत्कालीन कदम उठाए गए हैं, बाहर से डाक्टर भी बुलाये गए? अस्पताल के सिस्टम को मीडिया के द्वारा दिखाने के बाद ठीक किया गया। आईसीयू के अन्दर बेड क्यों बढ़ाए गए लेकिन ये तमाम कार्यवाही इस बात की ओर इशारा कर रही हैं कि सरकार इस विपत्ति के लिए पहले से तैयार

.....प्रश्न ये भी है कि आखिर इतनी बड़ी त्रासदी पर सारे राजनेता मौन क्यों हैं? क्या मौन की एक वजह इन नेताओं की आत्मग्लानि समझी जाये क्योंकि ये जवाब देने की स्थिति में नही हैं। पिछले एक दशक से ये बीमारी मुजफ्फरपुर के हजारों बच्चों को लील गई लेकिन उसका कोई इलाज आज तक नहीं निकला। देखा जाये बिहार में नीतीश कुमार सरकार के 14 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। नितीश सरकार तो इसके लिए जिम्मेदार है लेकिन विपक्ष भी अपनी भूमिका से बच नहीं सकता। इस बीमारी ने एक बार फिर नेताओं की पोल खोल के रख दी है।.........

नहीं थी जबकि यह विपत्ति हर साल आती है। क्या सरकारों को अपने स्वास्थ्य व्यवस्थाओं को लेकर गंभीर सोच नही बनानी चाहिए? आज उपमुख्यमंत्री इस बीमारी के रिसर्च के 100 करोड़ रूपये की मांग कर रहे हैं, यह काम पहले भी हो सकता था। वर्तमान केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डा. हर्षवर्धन जी ने कई साल पहले इसी बीमारी के दौरान मुजफ्फरपुर आये थे और यह बयान दिया था कि इस बीमारी का पता लगाने के लिए अनुसंधान किया जाएगा लेकिन कई वर्ष बीत गये अभी तक इस से कितना आगे बढ़े यह सवाल भी देश की स्वास्थ्य व्यवस्थाओं की पोल खोल रहा है। सरकार कोई भी हो वह नींद में रहती है। उसे लगता है कि संसद में बैठकर कानून बना देने से और आयुष्मान योजना का ऐलान कर देने मात्र से लोगों की मुश्किलें हल हो जाती हैं पर ऐसा नहीं है। बताया जाता है आप किसी मरीज को अस्पताल में ले जाते हैं तो आपको उसी वक्त बताना होगा कि आप आयुष्मान कार्ड वाले हैं, बाद में बताएंगे तो यह योजना मान्य नहीं होगी और अगर आपने आयुष्मान का नाम लिया तो अस्पताल फिर कोई बहाना बताकर इलाज से कई बार इंकार भी कर देता है। नीतीश के इस कथन में जरुर दम है कि लोगों के बीच जागरूकता की कमी है। इस बीमारी की जड़ें गरीबी और कुपोषण से जुड़ी हैं, ये बिहार की एक महत्त्वपूर्ण समस्या है। इस कारण सरकार को सबसे ज्यादा कुपोषण को ध्यान में रखकर एक बड़ी लड़ाई लड़नी होगी ताकि किसी के घर का चिराग इलाज की कमी की वजह से 'न' बुझे।

- सम्पादक

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

आखिर गलती किसकी है?

एक कहावत है - आगे कुआँ पीछे खाई। हाल ही में यह कहावत इस्लामिक मुल्क लेबनान में चरित्रार्थ होती दिखी। लेबनान की राजधानी बेरूत में कुछ समय पहले सैकड़ों लड़कियां ने आईएस के आतंकियों से जान और मान बचाकर शरण ली थी। किन्तु वहां के आतंकियों से न बच सकी और 10 से 19 वर्ष की साल की ये करीब 400 लड़कियां लेबनान के आतंकी गुटों की हवस मिटाने का साधन मात्र बनकर रह गई हैं। उनके साथ दासी की तरह व्यवहार किया जा रहा है। इस सबसे डरे सहमे कुछ के माता-पिता तो उनका बाल विवाह तक कर रहे हैं ताकि उन दरिंदों से उनकी बेटियां बच जाये।

इस्लामिक मुल्कों से ऐसी खबरें आना आम बात है। ये न पहली खबर है और न ही आंखिरी। क्योंकि इससे पहले भी मानवाधिकार मामलों पर नजर रखने वाली अंतरराष्ट्रीय संस्था एमनेस्टी इंटरनेशनल ने इस्लामिक आतंकियों की शिकार यजीदी समुदाय की बच्चियों और महिलाओं पर एक रिपोर्ट जारी की थी। जिसमें कहा गया था कि बंदी बनाई गई यजीदी लड़कियों में 10 से 12 साल की लड़कियां भी हैं। जिनका यौन शोषण किया गया और उन्हें सिगरेट के दामों बेचा गया तथा सीरिया और इराक में इन लड़कियों का आईएस आतंकियों और उनके समर्थकों के बीच तोहफे के तौर पर लेन देन भी हुआ। कई बार वे एक व्यक्ति से दूसरे के पास भेजी जाती रहीं। इन लड़कियों को इस्लाम धर्म अपनाने के लिए भी मजबूर किया गया।

संस्था के अनुसार करीब 5000 से अधिक बंधक बनाई उन यजीदी महिलाओं और बच्चियों के साथ क्रूरता की सारी हदें पार कर दी गईं थी। इन्हें सेक्स गुलाम के तौर पर बेचा गया, जहां रेप, गुलामी और प्रताड़ना ही इनकी जिंदगी थी। संस्था के सलाहकार डोनाटेला रोवेरा ने तो यहाँ तक बताया था कि इस सबसे यजीदी महिलाओं और लड़कियों का जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। बलात्कार के डर से कई लड़कियों ने आत्महत्या तक कर ली थी।

.......मानवता के दृष्टिकोण से देखा जाये इस्लामिक देशों में ऐसे जघन्य अपराध कई शताब्दियों से जारी है, न मध्यकाल में इनके खिलाफ कोई खड़ा हुआ और न आज इस कारण इस बर्बरता को एक किस्म से स्वीकार सा कर लिया गया। जबकि आज की आधुनिक दुनिया में जब जहाँ कोई अपराध होता है तो उसका विश्लेषण किया जाता है। ...... किन्तु इस्लाम के अन्दर से जब ऐसी घटनाएँ सामने आती है तो महज इन्हें चरमपंथ से जोड़कर या भटके हुए लोग बताकर खारिज कर दिया जाता है। ......

आतंकियों के चंगुल से बची यजीदी मूल की एक लड़की लामिया की कहानी तो इतनी दर्दनाक है कि सुनकर रोंगटे खड़े हो जायें। लामिया को जब आतंकी उठाकर ले गये तो उस रात उसके साथ 40 आतंकियों ने गैंग रेप किया और फिर बेच दिया गया। उस पर क्रूरता के साथ उसे आत्मघाती हमलावर बनने को मजबूर किया गया। जब-जब लामिया ने भागने की कोशिश की तो उसे पकड़कर मौसुल की शरिया अदालत में मौलानाओं के सामने पेश किया गया जहाँ उसे मारने और एक पैर काटने का फैसला सुनाया गया। ऐसे ही एक दूसरी 17 साल की यजीदी लड़की यास्मीन तो बार-बार रेप और यौन शोषण से इतनी खौफजदा हो गई और उसने शिविर के भीतर ही अपने ऊपर गैसोलीन पदार्थ डालकर खुद को जला लिया था कि जलने के बाद वह बदसूरत हो जाएगी और इसके चलते आई.एस. लड़ाके उसका फिर से बलात्कार नहीं करेंगे।

मानवता के द्रष्टिकोण से देखा जाये इस्लामिक देशों में ऐसे जघन्य अपराध कई शताब्दियों से जारी है, न मध्यकाल में इनके खिलाफ कोई खड़ा हुआ और न आज, इस कारण इस बर्बरता को एक किस्म से स्वीकार सा कर लिया गया। जबकि आज की आधुनिक दुनिया में जब जहाँ कोई अपराध होता है तो उसका विश्लेषण किया जाता है। अपराधी को यह सोच कहाँ से मिली, उसका उद्देश्य, उसकी मानसिकता आदि पर तथ्य सामने रखे जाते है। किन्तु इस्लाम के अन्दर से जब ऐसी घटनाएँ सामने आती हैं तो महज इन्हें चरमपंथ से जोड़कर या भटके हुए लोग बताकर खारिज कर दिया जाता है।

आखिर आतंकी ऐसा क्यों करते हैं इन्हें ऐसा करने का आदेश कौन देता है यह सवाल सार्वजनिक रूप से पूछे भी नहीं जा सकते न इनका विश्लेषण किया जा सकता है। हाँ इस सवाल का उत्तर पिछले कुछ समय पहले मिस्र के मशहूर अल- अजहर यूनिवर्सिटी की एक महिला प्रोफेसर सउद सालेह ने दिया था। सउद सालेह ने मिस्र के स्थानीय टीवी चौनल को दिए इंटरव्यू में इस सवाल का ईमानदारी से जवाब देते हुए कहा था कि अल्लाह मुस्लिमों को अधिकार देता है कि वह गैर मुस्लिम महिलाओं का रेप कर सकें। गैर मुस्लिमों को सबक सिखाने के लिए खुदा ने यह अधिकार मुस्लिमों को दिया है।

सालेह ने आगे इस साक्षात्कार में कहा कि मुस्लिम मर्दों को गुलाम महिलाओं के साथ शारीरिक संबंध बनाने का अधिकार है, इसमें कुछ गलत नहीं है। क्योंकि इस्लाम में मुस्लिम मर्दों को गैर मुस्लिम महिलाओं के साथ संबंध बनाने की छूट दी गई है। सालेह यही नहीं रुकी बल्कि उसनें आगे यह भी कहा था कि इजरायल महिलाओं को गुलाम बनाने और उनके साथ रेप करने में कुछ भी गलत नहीं है, मुस्लिम मर्द अगर ऐसा करते हैं तो यह स्वीकार्य है और इसे बढ़ावा देना चाहिए। इसी तरह युद्ध में बंधक बनाई गई महिला कैदियों को सबक सिखाने के लिए भी ऐसा किया जा सकता है। पराजित सेना की महिलाएं विजेताओं की गुलाम होती हैं। विजयी मुस्लिम योद्धाओं को अधिकार है कि बंधक महिलाओं के साथ कुछ भी करने की खुली छूट है। हालांकि सालेह के इस अंसवेदनशील बयान की सोशल मीडिया पर जमकर आलोचना हुई थी। दुनिया भर के प्रोफेसर और शिक्षाविदों ने उनके बयान की आलोचना की थी। किन्तु एक छुपा रहस्य बाहर आ गया था। कुछ लोगों ने कहा था कि सालेह ने बस वह बोला जो इस्लाम के अन्दर सिखाया जाता रहा है। अब यदि ऐसा है तो फिर इसमें आतंकियों का कोई दोष नहीं है। बस उन्हें जो सिखाया जाता वे सिर्फ उसे अंजाम देते हैं और यदि ऐसा है तो आखिर गलती किसकी है और इन अपराधों का जिम्मेदार कौन है और उसे कब सामने लाया जायेगा?

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

पण्डित ताराचरण से शास्त्रार्थ

महर्षि का पण्डित ताराचरण से जो शास्त्रार्थ हुआ था, उसकी चर्चा प्राय: सब जीवन-चरित्रों में थोड़ी-बहुत मिलती है। श्रीयुत दत्तजी भी इसके एक प्रत्यक्षदर्शी थे, अत: यहाँ हम उनके इस शास्त्रार्थ विषयक विचार पाठकों के लाभ के लिए देते हैं। इस शास्त्रार्थ का महत्त्व इस दृष्टि से विशेष है कि पण्डित श्री ताराचरणजी काशी के महाराज श्री ईश्वरीनारायणसिंह के विशेष राजपण्डित थे। पण्डितजी ने भी काशी के 1869 शास्त्रार्थ में भाग लिया था। विषय इस शास्त्रार्थ का भी वही था अर्थात् 'प्रतिमा-पूजन'।

पण्डित ताराचरण अकेले ही तो न थे। साथ भाटपाड़ा (भट्टपल्ली) की पण्डित मण्डली भी थी। महर्षि यहाँ भी अकेले ही थे, जैसे काशी में थे। श्रीदत्त लिखते हैं, ''शास्त्रार्थ बराबर का न था, कारण ताराचरण तर्करत्न में न तो ऋषि दयानन्द-जैसी योग्यता तथा विद्वत्ता थी और न ही महर्षि दयानन्द-जैसी वाणी का बल था। इस शास्त्रार्थ में बाबू भूदेवजी, बाबू श्री अक्षयचन्द सरकार तथा पादरी लालबिहारी से सरीखे प्रतिष्ठित महानुभाव उपस्थित थे।''

श्रीयुत दत्तजी लिखते हैं कि महर्षि वेद, शास्त्र, स्मृतियों, रामायण व महाभारत आदि के सब प्रमाण बिना पुस्तक देखे ही बता दिया करते थे। उन्हें पुस्तक देखने की आवश्यकता ही न थी। अपनी स्मरणशक्ति के भरोसे सब मन्त्र तथा श्लोक प्रस्तुत कर देते थे।

श्री मोहनदत्त लिखते हैं कि जिनको अपने शास्त्रज्ञान का अथवा संस्कृतज्ञ होने का अभिमान था, उनमें से कोई भी उनसे शास्त्रार्थ करने का साहस नहीं कर पाता था। उनके सामने आने से सब डरते थे। सज्जन लोग उनके दर्शन को आते रहते थे। उनके दरबार में भीड़ लगी रहती थी।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश का ग्रीष्मकालीन चरित्र निर्माण एवं प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि देव दयानंद जी ने मानव समाज के ऊपर जहां अनेक उपकार किए वहीं नारी जाति को शिक्षा और संस्कार देकर स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर बनाने पर स्वामी जी ने सबसे ज्यादा बल दिया। अत: आर्यसमाज में नारी को सदैव अग्रिम पंक्ति में सम्मान दिया जाता है। महर्षि की प्रेरणा से प्रेरित होकर आर्यसमाज अनेकानेक कन्या गुरुकुल, विद्यालय संचालित करता है, जहां पर विदुषी आचार्याओं के कुशल निर्देशन में आर्य कन्याओं को शिक्षा, संस्कार तथा आत्मरक्षा के गुण सिखाए जाते हैं। इससे भी आगे समय-समय पर क्षेत्रीय, प्रांतीय और राष्ट्रीय स्तर पर आर्य वीरांगनाओं के शिविरों का आयोजन भी किया जाता है। इन विशेष शिविरों में कन्याएं वैदिक धर्म, संस्कृति एवं संस्कारों से अपने जीवन को गरिमा प्रदान करती हैं तथा व्यायाम के माध्यम से योगासन, प्राणायाम, दंड-बैठक, जुडो- कराटे, यज्ञ, योग, स्वाध्याय आदि से आत्मबल प्राप्त करती हैं।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश द्वारा प्रांतीय स्तर पर विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा शिविर का भव्य आयोजन 19 मई से 26 मई 2019 के बीच आर्य कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली में आयोजित किया गया। जिसमें लगभग 180 कन्याओं ने भाग लिया। 19 मई की सायंकालीन वेला में इस शिविर का ठाकुर विक्रम सिंह द्वारा ध्वजारोहण कर विधिवत् उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी विशिष्ट अतिथि आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा जी एवं श्रीमती कृष्णा ठुकराल इत्यादि आर्यसमाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य आदि उपस्थित रहे। इसके साथ-साथ कन्या गुरुकुलों की विदुषी आचार्याएं, शिविरा अध्यक्ष शारदा आर्या एवं प्रधान शिक्षिका अभिलाषा आर्या, आर्य समाज के नेता आदि अनेक सम्माननीय माताएं, बहनें उपस्थित रहीं।

इस 8 दिवसीय चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा शिविर में नियम, अनुशासन और व्यवस्था अत्यंत अनुकरणीय रही। प्रतिदिन प्रात: 4 बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक एक आदर्श दिनचर्या के तहत आर्य वीरांगनाओं ने अपने जीवन को तप, त्याग, स्वाध्याय, यज्ञ, योग आदि विशेष गुणों से सुशोभित किया। प्रात: 5 बजे से आसन, प्राणायाम, दंड बैठक आदि का प्रशिक्षण और अभ्यास दिनचर्या का प्रथम चरण था। इसके उपरांत देवयज्ञ में सभी सम्मिलित होते थे। 10 बजे से 12 बजे तक प्रात: तथा सायं 3 बजे से 4 बजे तक प्रतिदिन बौद्धिक कक्षाओं का आयोजन किया जाता था। रात्रि में शयन से पूर्व भजन, श्लोक, उच्चारण आदि के कार्यक्रम आयोजित होते थे। आर्य कन्याओं को अनुशसित दिनचर्या, शाकाहार का महत्व, पाखंड से दूर रहने की प्रेरणा, राष्ट्रसेवा की भावना, नैतिक मूल्यों का अनुसरण, जीवन उन्नति की सूत्र, उत्तम व्यवहार का महत्व आदि सारगर्भित विषयों पर आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि से उत्तम विचार प्रदान किए जाते थे। इस कार्य में बौद्धिका अध्यक्ष लिपिका आर्य जी, आचार्या अमृता जी, आचार्या सविता जी आदि विदुषी बहनों का प्रयास प्रशंसनीय है।

26 मई 2019 को इस विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा शिविर का भव्य समापन समारोह आयोजित किया गया। जिसमें पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने अध्यक्ष के पद को सुशोभित किया। इस अवसर पर महाशय जी की पुत्रवधु श्रीमती ज्योति गुलाटी जी भी उपस्थित रहीं। महाशय जी का स्वागत शिविराध्यक्ष आदरणीय शारदा आर्या जी, श्रीमतजी अमृता आर्या, स्नेह भाटिया, डॉ. रचना चावला जी, श्रीमती वीना आर्या जी, श्रीमती पुष्पा महावर जी, श्रीमती एवं कीर्ति शर्मा जी आदि ने किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान जी, आर्यवीर दल दिल्ली के महामंत्री श्री बृहस्पति आर्य जी, पूर्व विधायक नील दमन खत्री जी आदि महानुभावों ने शिविर में सहभागी सर्वश्रेष्ठ वीरांगनाओं को स्मृति चिह्न, मैडल तथा प्रशस्ति पत्र देकर पुरुस्कृत किया।

शिविर के समापन समारोह के अवसर पर आर्य वीरांगनाओं ने परेड, लाठी, भाला, जुड़ो-कराटे, कठिन योगासन का अभ्यास अत्यंत प्रशंसनीय रहा। समस्त व्यायाम प्रशिक्षण में प्रधान शिक्षिका श्रीमती अभिलाषा आर्या का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर श्री विनय आर्य जी ने

- शेष पृष्ठ 6 पर

शिविर के समापन समारोह में उपस्थित पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के साथ आर्य वीरांगना दल की अधिकारी एवं अतिथिगण।

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी एवं पुत्रवधु श्रीमती ज्योति गुलाटी जी को स्मृति चिह्न भेंट करती आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश की अधिकारी

समापन समारोह के अवसर पर व्यायाम प्रदर्शन करती आर्य वीरांगनाएं।

श्रेष्ठ वीरांगनाओं को पुरस्कार प्रदान करते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी, श्रीमती ज्योति गुलाटी जी एवं श्रीमती शारदा आर्या जी।

आर्य नरेश राजर्षि शाहू महाराज के जन्मदिवस (26 जून) पर विशेष

आर्य नरेश राजर्षि शाहू महाराज एवं आर्यसमाज

महाराष्ट्र के बाहर बहुत कम लोग जानते हैं कि कोल्हापुर नरेश राजर्षि छत्रपति शाहू जी महाराज एक कट्टर 'आर्य समाजी ' राजा थे। सन् 1902 में जब वह इंग्लैंड जा रहे थे तब उनकी मुलाकात जोधपुर के नरेश सर प्रताप सिंह महाराज से हुई। जोधपुर नरेश के माध्यम से उनका आर्यसमाज से प्रारंभिक परिचय हुआ। भारत वापिस आने के बाद उनका वडोदरा के महाराज श्री श्याजीराव गायकवाड़ और उनके आर्य समाज प्रचारक मास्टर आत्माराम अमृतसरी जी से परिचय हुआ। इस परिचय का परिणाम यह निकला कि शाहूजी महाराज कट्टर आर्य समाजी बन गये ।

शाहू महाराज जी ने अपने राज्य में सुधार कार्य प्रारम्भ किया। उनका संकल्प था कि 'आर्य धर्म विश्व धर्म बने'। इस इच्छा से आपने कोल्हापूर नगर में आर्य समाज का डंका जोर-शोर से बजाया। उन्होंनें शिवाजी वैदिक विद्यालय की स्थापना की और शाहू दयानंद नाम से कॉलेज खुलवाया। स्वामी श्रद्धानन्द नाम का आर्य मन्दिर बनाया। गौ हत्या प्रतिबंधक कानून को लागू किया। उस काल की सबसे प्रभावशाली बात। उन्हेंने कोल्हापूर में 1918 से 1935 तक के काल में 26000 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथ छपवाए। आपने राज्य में जितने भी वरिष्ठ अधिकारी आदि होते थे। उनको 'सत्यार्थ प्रकाश' का अध्ययन और परिक्षा अनिवार्य किये।

उन्होंनें शूद्रों के उपनयन संस्कार और वेद की शिक्षा का प्रबंध किया। उन्होंने शूद्रों के सभी धार्मिक कृत्यों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने शूद्रों को उच्च शिक्षा दिलाने के लिए छात्रवृति दी। उसी छात्रवृति से डॉ. भीमराव अंबेडकर को विदेश जाकर पी.एच.डी. करने का अवसर प्राप्त हुआ। ध्यान दीजिये डॉ अम्बेडकर को यह छात्रवृति मास्टर आत्माराम अमृतसरी जी के सहयोग से मिली थी। डॉ. भीमराव अम्बेडकर कहते हैं कि शाहू महाराज जी की जयंती को एक वृहद् त्योहार के रुप मे मनाया जाये। स्वामी दयानन्द के अटूट शिष्य एवं दलितोद्धार के संदेशवाहक आर्य नरेश श्री शाहू जी महाराज के महान व्यक्तित्व को

नमन। आर्य समाज की ओर से उनके जन्मदिन की सभी को हार्दिक बधाई।

- डॉ. विवेक आर्य फेसबुक वाल से

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षा शिविर सम्पन्न

आर्य वीरांगनाओं ने आत्मरक्षा और राष्ट्र निर्माण का लिया संकल्प

अजमेर राजस्थान, सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल एवं अपना घर आश्रम के संयुक्त तत्वाधान में 10 दिवसीय राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण वीरांगना शिविर का पोटडा, अजमेर राजस्थान में अपना घर मूक-बधिर एवं दृष्टिहीन सम्भाग स्तरीय आवासी विद्यालय में सम्पंन हुआ। इस शिविर में भारत के 15 राज्यों से सैकड़ों वीरांगनाओं ने भाग लेकर अपने जीवन को शारीरिक, आत्मिक और बौद्धिक दृष्टि से सुसम्पन्न किया। 31 मई को प्रात: काल इस शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रतिदिन प्रात: 5 बजे से आर्यवीरांगनाओं की दिनचर्या का आरंभ हो जाता था और सायं शयन तक एक नियमित दिनचर्या अनुशासित और व्यवस्थित रूप में गतिमान रहती थी। प्रात: काल व्यायाम, योगासन, प्राणायाम, जुड़ो-कराटे और तमाम आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया जाता था। प्रतिदिन बौद्धिक कक्षाओं का विशेष आयोजन किया जाता था। दिनचर्या के हर नियम में सभी वीरांगनाओं ने सहर्ष भाग लिया।

9 जून रविवार के दिन इस रचनात्मक शिविर का दीक्षांत एवं समापन समारोह सुनिश्चित था। इस अवसर पर आर्यवीर दल की प्रधान संचालिका साध्वी उत्तमा यति जी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। समारोह में अजमेर के सासंद श्री भागीरथ चौधरी जी, अजमेर के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सरिता सिंह, महर्षि निर्वाण न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. श्री गोपाल बाहेती जी, हाडारानी बटालियन की कमांडर प्रीति चौधरी जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, दिल्ली सभा के उपप्रधान श्री शिव कुमार मदान जी दिल्ली से बस द्वारा 20 आर्य कन्याओं को लेकर पहुंचे जो कि अपने आप में एक आदर्श कार्य है। एमिटी और एबीपी इण्डस्ट्रीज के निदेशक आनंद सिंह चौहान जी एवं अपन घर आश्रम के अध्यक्ष विष्णु प्रकाश गर्ग जी, डीएवी शिक्षण संस्थान राजस्थान के निदेशक अशोक शर्मा जी उपस्थित थे।

इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने वीरांगनाओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि शिविर में प्राप्त प्रशिक्षण को व्यवहार में उतारने के लिए निरन्तर अभ्यास जरुरी है। आप शारीरिक, आत्मिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक शिक्षाओं को अपनाकर जीवन को सफल बनाएं।

इस राष्ट्रीय शिविर में प्रशिक्षण में उत्तीर्ण हुई शारीरिक, सैनिक, शूटिंग, रस्सी मलखम प्रशिक्षण एवं अनुशासन और शिविर सर्वश्रेष्ठ कन्याओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कारों से अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। शिविर की संचालिका मृदुला चौहान ने सभी अतिथियों से शिविर के प्रशिक्षक के रूप में अभिलाषा आर्य, सचिन कुमार, सत्यम आर्य, शुभम आर्य एवं भारती आदि का कार्यकर्ताओं का परिचय कराते हुए सभी का सम्मान करवाया। शिविर के स्वास्थ्य की देखरेख डॉ. शैलेष वर्मा व भावना वर्मा, वन्दना आर्य ने की। दल की सचिव आरती खुराना के अनुसार कार्यक्रम का संचालन उर्मिला आर्य ने किया। उमंग, उत्साह और प्रेम सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

समापन समारोह के अवसर पर मंचस्थ अतिथिगण एवं इस अवसर पर व्यायाम प्रदर्शन करतीं आर्य वीरांगनाएं

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी बलिदान दिवस (23 जून) पर विशेष

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का पुण्य स्मरण

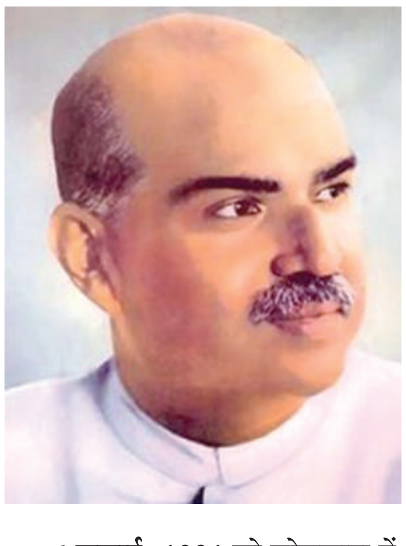

6 जुलाई, 1901 को कोलकाता में श्री आशुतोष मुखर्जी एवं योगमाया देवी के घर में जन्मे डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी को दो कारणों से सदा याद किया जाता है। पहला तो यह कि वे योग्य पिता के योग्य पुत्र थे। श्री आशुतोष मुखर्जी कलकत्ता विश्वविद्यालय के संस्थापक उपकुलपति थे। वर्ष 1924 में उनके देहान्त के बाद केवल 23 वर्ष की अवस्था में ही श्यामाप्रसाद को विश्वविद्यालय की प्रबन्ध समिति में ले लिया गया। 33 वर्ष की छोटी अवस्था में ही उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति की उस कुर्सी पर बैठने का गौरव मिला, जिसे किसी समय उनके पिता ने विभूषित किया था। चार वर्ष के अपने कार्यकाल में उन्होंने विश्वविद्यालय को चहुँमुखी प्रगति के पथ पर अग्रसर किया।

दूसरे जिस कारण से डॉ. मुखर्जी को याद किया जाता है, वह है जम्मू-कश्मीर के भारत में पूर्ण विलय की माँग को लेकर उनके द्वारा किया गया सत्याग्रह एवं बलिदान। 1947 में भारत की स्वतन्त्रता के बाद गृहमन्त्री सरदार पटेल के प्रयास से सभी देसी रियासतों का भारत में पूर्ण विलय हो गया, पर प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तिगत हस्तक्षेप के कारण जम्मू कश्मीर का विलय पूर्ण नहीं हो पाया। उन्होंने वहाँ के शासक राजा हरिसिंह को हटाकर शेख अब्दुल्ला को सत्ता सौंप दी। शेख जम्मू कश्मीर को स्वतन्त्र बनाये रखने या पाकिस्तान में मिलाने के षड्यन्त्र में लगा था।

शेख ने जम्मू कश्मीर में आने वाले हर भारतीय को अनुमति पत्र लेना अनिवार्य कर दिया। 1953 में प्रजा परिषद तथा भारतीय जनसंघ ने इसके विरोध में सत्याग्रह किया। नेहरू तथा शेख ने पूरी ताकत से इस आन्दोलन को कुचलना चाहा, पर वे विफल रहे। पूरे देश में यह नारा गूँज उठा - एक देश में दो प्रधान, दो विधान, दो निशान, नहीं चलेंगे।

डॉ. मुखर्जी जनसंघ के अध्यक्ष थे। वे सत्याग्रह करते हुए बिना अनुमति जम्मू कश्मीर में गये। इस पर शेख अब्दुल्ला ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। 20 जून को उनकी तबियत खराब होने पर उन्हें कुछ ऐसी दवाएँ दी गईं, जिससे उनका स्वास्थ्य और बिगड़ गया। 22 जून को उन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया। उनके साथ जो लोग थे, उन्हें भी साथ नहीं जाने दिया गया। रात में ही अस्पताल में ढाई बजे रहस्यमयी परिस्थिति में उनका देहान्त हुआ।

मृत्यु के बाद भी शासन ने उन्हें उचित सम्मान नहीं दिया। उनके शव को वायुसेना के विमान से दिल्ली ले जाने की योजना बनी, पर दिल्ली का वातावरण गरम देखकर शासन ने विमान को अम्बाला और जालन्धर होते हुए कोलकाता भेज दिया। कोलकाता में दमदम हवाई अड्डे से रात्रि 9.30 बजे चलकर पन्द्रह कि.मी. दूर उनके घर तक पहुँचने में सुबह के पाँच बज गये। 24 जून को दिन में ग्यारह बजे शुरू हुई शवयात्रा तीन बजे शमशान पहुँची। हजारों लोगों ने उनके अन्तिम दर्शन किये।

आश्चर्य की बात तो यह है कि डॉ. मुखर्जी तथा उनके साथी शिक्षित तथा अनुभवी लोग थे, पर पूछने पर भी उन्हें दवाओं के बारे में नहीं बताया गया। उनकी मृत्यु जिन सन्देहास्पद स्थितियों में हुई तथा बाद में उसकी जाँच न करते हुए मामले पर लीपापोती की गयी, उससे इस आशंका की पुष्टि होती है कि यह नेहरू और शेख अब्दुल्ला द्वारा करायी गयी चिकित्सकीय हत्या थी। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने अपने बलिदान से जम्मू-कश्मीर को बचा लिया। अन्यथा शेख अब्दुल्ला उसे पाकिस्तान में मिला देता।

डॉ. मुखर्जी जी आर्यसमाज के बड़े प्रशंसक थे। उन्होंने 1945 में सिंध में मुस्लिम लीग सरकार द्वारा सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने का पुरजोर विरोध किया था। आर्यसमाज द्वारा बुलाये गए सत्यार्थ प्रकाश रक्षा सम्मेलन की उन्होंने अध्यक्षता की थी। जनसंघ के महान नेता, प्रसिद्ध राष्ट्रवादी, कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाने के लिए अमर बलिदान देने वाले डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर नमन।

- डॉ. विवेक आर्य जी की फेसबुक वाल से साभार

सामवेद पारायण महायज्ञ

वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्य नगर रोहतक में 12 जुलाई से 16 जुलाई, 2019 तक सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन आचार्य सोमदेव जी के ब्रह्मत्व में आयोजित किया जा रहा है। यज्ञ-भजन एवं प्रवचन प्रात: 6 से 9 बजे एवं सायं 3:30 से 6:30 बजे तक होंगें। भजन एवं वेदपाठ आर्य कन्या भुसावर की छात्राओं द्वारा किया जाएगा।

- दर्शनकुमार अग्निहोत्री, प्रधान

विशाल संसार में आत्मा का अस्तित्व

......कोई भी राष्ट्र, राष्ट्र का नाम सबसे बड़ा होता है और राष्ट्र में प्रदेश हमने बना रखे हैं, अब उन प्रदेशों में फिर जिले हैं, उनमें भी विधान सभाएं और तहसील हैं, इसके बाद गांव या शहर हैं, उन शहरों में भी जहां आप बसते हैं, वहां मोहल्ले हैं, कालोनियां हैं, उन कालोनियों के बीच में आपने अपना एक घर बना रखा है, जहां आपकी मैं रहती है, अकड़ रहती है कि मैं इतना बड़ा आदमी हूं, ...

हम जितना संसार को अपनी आंखों से देखते हैं, यह केवल उतना ही नहीं है, बड़ा-विशाल और विराट है संसार। सूक्ष्म जगत तो और भी ज्यादा विशाल है। इतना विशाल है, अनंत है, जो पूरा कभी दिखाई देता ही नहीं है और जिसे पूरा देखने की हमारी क्षमता भी नहीं है। जिसे हम गिनते-गिनते थक जाते हैं, फिर भी पूरा नहीं गिन पाते तो वही अनंत हो जाता है। उसे ही असीम कहते हैं। सृष्टि जितनी दिखती है, उसे उतनी बिलकुल भी मत मानिए? और यह भी मत सोचिए कि जिस पृथ्वी पर आप रहते हैं वह यह केवल एक ही पृथ्वी मात्र है। क्योंकि मनुष्य की दृष्टि थोड़ी दूर तक ही देख सकती है। इस पृथ्वी पर रहने वाले जीवों के बारे में भी पूरी-पूरी किसी को जानकारी नहीं है और इससे आगे तो बहुत कुछ बाकी है। इस अखण्ड ब्रह्मांड में कितनी सारी पृथ्वी हैं, वहां तक मनुष्य अभी कहां पहुंच पाया है? ठीक है, विज्ञान ने खोजें की, विज्ञान सिर्फ अभी तक इतना ही बता पाया है कि ब्रह्मांड में दो सौ अरब निहारिकाएं हैं, आकाश गंगाएं हैं, जिन्हें ग्लेक्सी कहते हैं। जब हम आकाश में देखते हैं तो दूधिया रास्ते आकाश में दिखाई देते हैं, जिन्हें हम आकाश गंगा या मंदाकिनी भी कहते हैं। आकाश में कभी आप रात्रि में देखिए तारों का एक बहुत बड़ा समूह दिखाई देगा और उनके बीच में सीधी दूधिया रंग की लम्बी-सी लकीरें दिखाई देंगी, वही मिल्की वे हैं।

इतनी-सारी आकाश गंगाओं में दो अरब के लगभग सूर्य हैं और एक सूर्य के साथ एक पृथ्वी भी है और चंद्रमा भी है उसका पूरा सौर मंडल भी है, जिसमें सारे ग्रह और नक्षत्र हैं। आकाश में जैसे गेंद फेंकी जाए और वह गोल-गोल घूमे, ऐसे ही सारे ग्रह-नक्षत्र गोल-गोल घूम रहे हैं। न जाने भगवान ने इन्हें कौन से धागों से कैसे बांध रखा है? कोई धागा दिखाई तो नहीं देता, लेकिन सब अपनी-अपनी कक्षा में गोल-गोल घूम रहे हैं। इतना विशाल, अनंत एवं असीम आकाश है और उस आकाश के अंदर हजारों नहीं, लाखों नहीं, करोड़ों, अरबों, खरबों, नील, पदम, शंख-महाशंख जहां सारी गिनतियां खत्म हो जाती हैं। अनगिनत गेंदें घूम रही हैं वे गेंदें कुछ और नहीं हैं बल्कि ग्रह-नक्षत्र ही हैं। उन सबमें एक गेंद आपकी पृथ्वी है। उस एक पृथ्वी के अंदर आप बैठे हुए हैं। पृथ्वी पर भी हमने छोटे-छोटे क्षेत्र, भू-भाग हिस्से बना रखे हैं। जिसमें अनेक देश-प्रदेश हैं। उन सभी देशों को भी आप देखें तो उनमें 25 प्रतिशत ही पृथ्वी है, और बाकी 75 प्रतिशत पर पानी है। मतलब पूरी सृष्टि में 75 प्रतिशत जल तत्त्व है और 25 प्रतिशत में मनुष्य रहते हैं और उसमें भी आपने अपने-अपने देश बना रखे हैं। उन देशों में अनेक प्रदेश हैं, जैसे आप देखते हैं कि कोई भी राष्ट्र, राष्ट्र का नाम सबसे बड़ा होता है और राष्ट्र में प्रदेश हमने बना रखे हैं, अब उन प्रदेशों में फिर जिले हैं, उनमें भी विधान सभाएं और तहसील हैं, इसके बाद गांव या शहर हैं, उन शहरों में भी जहां आप बसते हैं, वहां मोहल्ले हैं, कालोनियां हैं, उन कालोनियों के बीच में आपने अपना एक घर बना रखा है, जहां आपकी मैं रहती है, अकड़ रहती है कि मैं इतना बड़ा आदमी हूं, क्योंकि जिसने दो-चार मंजिल का मकान बना लिया है, वह बहुत बड़ा आदमी है, जिसने थोड़े से कागज के नोट इकट्ठे कर लिए हैं, वह भी बहुत बड़ा आदमी है, जिसने दो-चार अपने साथ नौकर चाकर रख लिए हैं, तो उससे बड़ा दुनिया में कौन हो सकता है?

पूरे विश्व के विशाल आकार-नक्शे को सामने रखकर आप उसमें अपने भारत को खोजिए और उस भारत में जहां आप रहते हैं, तो उसमें दिल्ली को ढूंढ़िए तो आपकी पैंसिल की नोक से छोटी आपकी दिल्ली दिखाई देगी। उस दिल्ली में भी अपना घर ढूंढ़िए जहां आप रहते हैं। जब आप अपना घर खोजेंगे तो आपको वहां आपका घर मिलेगा ही नहीं, लेकिन यहां दिल्ली के नक्से में तो आप फिर भी कहीं-न-कहीं निशान लगा लेंगे। अगर पूरे ब्रह्मांड की बात करेंगे तो निशान लगाने वाली जगह भी नहीं मिलेगी। वैसे आजकल इंटरनेट के माध्यम से सर्च किया जा सकता है। लेकिन यह कहना होगा कि आप इतनी छोटी-सी ईकाई में बैठे हुए हैं। लेकिन अकड़ बहुत बड़ी है। चींटियां भी ये अकड़ रखती हैं कि मेरा घर बहुत बड़ा है, उसके पास भी एक अपनी चिमटी होती है। जिससे वह विशाल काय हाथी को भी नचा देती है। इस तरह से यहां सब की अपनी-अपनी मैं, अपनी-अपनी अकड़ है।

ये मैं कहने वाला, अकड़ में रहने वाला जो तत्व है, ये जो मैं और मेरे की बात करता है वह कौन है? तो इसको कहा गया है—आत्मा। जो कहता है **"अहमिन्द्रो न पराजिग्ये"** मैं इंद्र हूं, मैं राजा हूं, दुनिया से पराजित होने वाला नहीं हूं। आत्मा ने घोषणा की है कि- मैं मौत के पंजे को उखाड़कर फेंक दूंगा, मैं मरणशील नहीं हूं? संसार का सबसे बड़ा विधाता मेरा पिता है, जो सारे विधान बनाता है, संसार की रचना करता है, संसार का भोग-भोगने के लिए दुनिया में सबको भेजता है। वह कौन है? वह परमात्मा है। आत्मा इस सृष्टि का राजकुमार है और सारी सृष्टि को चलाने वाला संसार का स्वामी इसका पिता परमेश्वर है। उस पिता ने अपनी संतान को कहा- **"श्रृण्वन्तु सर्वे अमृतस्य: पुत्रा:"** हे अमृत पुत्रो! सुनो! तुम दुनिया में मरने के लिए नहीं आए हो। मतलब? कि तुम शरीर तो बदलते हो, लेकिन तुम अमृत हो। अमृत पुत्र हो, मरणशील नहीं हो।

इसलिए प्रभु से प्रार्थना कीजिए—

ईशा वास्यमिदं सर्व, यत् किंच
जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा, मा गृधः
कस्यस्विद्धनम्।। *(यजु0 40-1)*

प्रभु, इस विशाल-विराट संसार में आप ही सर्वव्यापक हैं, सृष्टि के कण-कण में, जर्रे-जर्रे में आपकी सर्वोपरि सत्ता विद्यमान है। आपकी व्यापकता का मुझे अहसास हो, आपकी कृपाओं को मैं महसूस करूं, निरंतर करता रहूं ऐसी कृपा कीजिए। संसार के समस्त पदार्थ तेरे हैं, तू ही सबका स्वामी है। तू ही सबका सृजक, पालक और पोषक है, सबका पिता और माता है। मैं तेरी संतान हूं, संसार के साधन-सुविधाओं का मैं त्याग पूर्वक भोग करूं। मेरे भीतर आसक्ति का भाव न जागे, निस्वार्थ भाव से मैं जीवन यापन करूं। अपने परिश्रम और पुरूषार्थ के द्वारा जो कुछ भी तेरी कृपा से मुझे प्राप्त हो उसमें मुझे सब्र-संतोष की प्राप्ति हो। धन ऐश्वर्यो के लिए मैं अपने जीवन के लक्ष्य से न भटक जाऊं, बल्कि आसक्ति को छोड़कर त्याग भावना से संसार में व्यवहार करूं। दुनिया का धन-वैभव कभी मुझे अपनी ओर न खींच पाए, मेरी दृष्टि में लोभ-मोह का भाव न आए। मैं अपनी शक्ति-श्रम का आनंद प्राप्त करूं। ऐसी कृपा कीजिए, दया कीजिए।

- अनिल शास्त्री

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2009 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2029 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - *सम्पादक*

आर्यसमाज की ऐतिहासिक घटनाएं

आर्यसमाज का इतिहास घटनाओं का इतिहास है। आर्यसमाज के इतिहास को बनाने में आर्यसमाजी बने व्यक्ति के साथ घटित घटनाओं का विशेष योगदान रहा है। आपके आर्य परिवार में भी किसी ऐतिहासिक घटना का होना सम्भव है।

अत: आप सभी पाठक महानुभावों से निवेदन है कि यदि आपके परिवार सदस्य के आर्य बनने अथवा किसी आर्य समाज मंदिर की स्थापना से सम्बन्धित के साथ ऐतिहासिक घटना घटित हुई हो या कोई ऐसी घटना जिसे आप आर्यसमाज के इतिहास के सम्बन्ध में ऐतिहासिक समझते हों और आपकी जानकारी में हो, हमें भेजने की कृपा करें। आपकी ऐतिहासिक घटना को आर्यसन्देश साप्ताहिक में जनसाधारण की जानकारी हेतु प्रकाशित किया जाएगा। - *सम्पादक*

पृष्ठ 4 का शेष

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश ....

आर्य वीरांगनाओं को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए यज्ञ, योग, स्वाध्याय और व्यायाम अत्यंत आवश्यक है। आर्य बहनों को इस रचनात्मक शिविर की सफलता के लिए बधाई। इस समारोह के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी ने आर्य वीरांगनाओं को आशीर्वाद देते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य वीरांगनाओं जाग जाओ, आज देश आर्यजनों की ओर निहार रहा है। अपने जीवन का निर्माण करो। आत्मरक्षा के आपने जो गुण यहां सीखे हैं इनका अभ्यास निरंतर करो, आप सब लगातार सफलता के शिखरों को छुएं। आप सबके लिए मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद।

इस शिविर को सफल बनाने में आचार्य सोमवीर चौधरी जी, श्री देवी सिंह मान जी, श्रीमती प्रकाश कथूरिया जी, श्री रामपाल शास्त्री जी, प्रधान श्री ब्रह्मव्रत कौशिक जी, श्री राजपाल आर्य जी, श्री हेमराज बंसल जी, आचार्य शिवा शास्त्री जी, श्रीमती सुनीती जावा जी आदि अनेक अन्य महानुभावों के साथ-साथ आर्य वीर दल व दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं का योगदान रहा। प्रेम और सौहार्द के वातावरण में सफलता के साथ शिविर सम्पन्न हुआ।

- शारदा आर्या, संचालिका

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दूरभाष: 23360150, 9540040339

17वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

19 से 21 अप्रैल 2019, आर्यसमाज मंदिर इंद्रपुरी द्वारा आयोजित तीन दिवसीय वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। विशेष आकर्षण प्रथम दिन पांच कुंडीय यज्ञ तथा समापन के अवसर पर ग्यारह कुंडीय यज्ञ रहा, जिसमें सैकड़ों आर्यजनों ने परिवार सहित आहुतियां प्रदान कर विश्व कल्याण की कामना और प्रार्थना की। यज्ञ के ब्रह्मा श्री विष्णुदत्त शास्त्री जी, श्री रघुराज शास्त्री जी, श्री कर्णसिंह शास्त्री जी रहे। सब विद्वानों ने वेद शतकम् के मंत्रों के भावपूर्ण अर्थों को भी विस्तार से समझाया।

- डॉ. टी. आर. दयाल, मंत्री

पृष्ठ 5 का शेष

वीरनारायण के पास एक संदेश भेजा- 'बेटा अब तुम्हारा मुख देखना मेरे भाग्य में नहीं है। अपना इलाज करवाना व भावी युद्ध के लिए तैयार रहना, मैं हटूंगी नहीं, तेरे पिता के पास स्वर्ग जाना चाहती हूं। मेरे मरने के बाद गोंडवाने की रक्षा करना। भगवान यदि सफलता दे तो अच्छा है, लेकिन यदि पराजय हुई तो हिन्दू महिलाओं को मुसलमानों के हाथ मत पड़ने देना। उन्हें अग्नि देवता को सौंप देना। समय नहीं है अत: युद्ध के पूर्व जौहर की व्यवस्था कर लेना।

अपने पुत्र को समाचार भेज दुर्गावती अपने मुट्ठीभर सैनिकों के साथ शिविर से निकलीं। सामने खड़ा था विशाल मुगल रिसाला। कल के युद्ध में अतिरिक्त सेना के कारण मुगलों की क्षति कम हुई। दुश्मन के निकट पहुंच दुर्गावती ने हाथी के होदे में खड़े हो अपने सैनिकों पर एक नजर फेरी और अपना धनुष उठा गरज पड़ी- 'हर-हर महादेव' सैनिकों ने विजय घोष किया- 'हर-हर महादेव' और हिन्दू सैनिक मृत्यु का आलिंगन करने मुगल सेना पर टूट पड़े।

500 हाथियों पर बैठे 1 हजार सैनिक और साथ के 5 हजार घुड़सवारों को मुगल रिसाले ने चारों ओर से घेर लिया। एक-एक कर हिन्दू घुड़सवार गिरते चले गए, सेना सिकुड़ती गई। अब मरने की बारी थी गज सवारों की। मुगलों की निगाह हाथी पर सवार 33 वर्षीय सुंदर दुर्गावती पर लगी हुई थी। आसफ खां ने आदेश दिया कि आसपास के हाथी सवारों को समाप्त कर दुर्गावती को जीवित पकड़ लो। इसे शहंशाह को सौंप इनाम पाएंगे।

धीरे-धीरे सारे हाथी समाप्त हो गए। जिधर दृष्टि डालो उधर ही मुगल घुड़सवार छाए थे। मुगलों का घेरा कसने लगा, लेकिन दुर्गावती के तीरों का बरसना बंद नहीं हुआ। तभी तीरों की एक बौछार दुर्गावती के हाथी पर लगी। महावत मारा गया। एक तीर दुर्गावती के गले और एक हाथ को भेद गया। असह्य पीड़ा से धनुष हाथ से छूट गया। हाथी को घेरकर खड़े मुगल सैनिक हाथी पर चढ़ने का प्रयास करने लगे। कुछ गंदी फब्तियां भी कस रहे थे। प्रतिष्ठा और बेइज्जती में गजभर का फासला था। दुर्गावती ने परिस्थिति को भांपा और शीघ्रता से कमर में खुसी कटार खींची- 'जय भवानी!' गरज समाप्त होते ही छप्प से कटार अपने हृदय में मार ली। पंछी उड़ चुका था। दुर्गावती की निष्प्राण देह हौदे में पड़ी थी।

एक शांत राज्य, जहां के लोग सुखपूर्वक अपना जीवन जी रहे थे। किसी पड़ोसी पर आक्रमण नहीं कर रहे थे। ऐसे शांत राज्य को केवल अपने धन की पिपासा और स्त्रियों के लोभ में अकबर ने अकारण नष्ट कर डाला। गोंडवाने में लाखों हिन्दू मारे गए।

इतिहास लेखक स्मिथ कहता है कि भविष्य में भारतीय राज्यों को हड़पने वाले डलहौजी को भी अकबर ने मात कर दिया। नागरिकों की सुख-शांति को अकारण हाहाकार में बदल देने वाला व्यक्ति नरपिशाच तो हो सकता है, महान कदापि नहीं हो सकता।

- रामसिंह शेखावत

यातायात पुलिस कर्मियों को पानी की छगल भेंट

आर्यसमाज कोटा की ओर से दिनांक 23 जून को ट्रैफिक पुलिस कर्मियों को पानी की छगल भेंट की गई। भेंटकर्ताओं में जिला आर्यसमाज के प्रधान श्री अर्जुन देव चड्डा, डी.ए.वी. स्कूल कोटा की प्रधानाचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, कृष्णा रोटरी ब्लड बैंक के अध्यक्ष डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री सम्मिलित थे। उन्होंने एरोड्राम सर्किल कोटा पर कार्यरत पुलिस कर्मियों को पानी की छगल प्रदान कीं।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज दयानन्द विहार

दिल्ली-110092

प्रधान : श्रीमती सन्तोष मिगलानी
मन्त्री : डॉ. ईश कुमार नारंग
कोषाध्यक्ष : डॉ. आशा मेहता

आर्यसमाज कोसी कलां

मथुरा (उ.प्र.)

प्रधान : डॉ. अमरसिंह पोनिया
मन्त्री : श्री विजय आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री सत्यप्रकाश

वधू चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, जन्मतिथि 12/01/1992, कद - 5 फुट 5 इंच, शिक्षा - B.Tech. (Com. Sc.) NIT Raipur से, Multinational Company में अच्छी पोस्ट पर कार्यरत, प्रतिष्ठित परिवार के युवक हेतु आर्य परिवार की सुशिक्षित एवं संस्कारवान युवती चाहिए। सम्पर्क करें-

9412865775, 9412135060

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

ग्राम उसावा, जिला बदायूं उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज का शिलान्यास

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से निरंतर आर्यसमाज का पूरे भारत में और विश्व में निरंतर विस्तार हो रहा है। इस क्रम में बदायूं जिले के ग्राम उसावा में 150 वर्ग मीटर भूमि पर 19 जून 2019 को आर्यसमाज का शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर इस भूमि को आर्यसमाज के लिए दान देने वाले श्री रामेश्वर दयाल आर्य, ग्राम पत्रालय-लमारी तहसील दातागंज, कुमारी विदयोत्तमा आर्या, कुमारी सुमन आर्या, कुमारी लता आर्या, आर्ष गुरुकुल देहरादुन से कुमारी नीलम आर्या, भजनोपदेशिका तथा बदायूं से श्री सत्य ओम् आर्य आदि ने शिलान्यास से पूर्व सभी आर्यजनों ने आचार्य विजयदेव जी के सानिध्य में मिलकर यज्ञ किया। इसके उपरांत जिला आर्य समाज के प्रधान श्री वेदव्रत आर्य की अध्यक्षता में आर्यसमाज मंदिर के निर्माण की आधारशिला रखी गई। इस अवसर पर श्री महेंद्रपाल गुप्ता ने अपने उदबोधन में कहा कि महर्षि दयानंद जी के दिखाए रास्ते पर आगे बढ़ने से ही विश्व का कल्याण होगा। इस कार्यक्रम में श्री हरिकृष्ण आर्य, श्री थानेश्वर सिंह आर्य, श्री डोरी लाल आर्य, श्री धर्मवीर आर्य आदि अनेक अन्य महानुभावों की उपस्तिथि प्रशंसनीय और सहयोगी के रूप सराहनीय रही।

- रामेश्वर दयाल आर्य

शोक समाचार

श्रीमती ललिता आनन्द का निधन

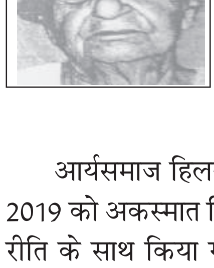

आर्यसमाज कीर्ति नगर की सदस्या एवं सदस्य श्री अनिल वीर आनन्द जी की धर्मपत्नी श्रीमती ललिता आनन्द जी का लगभग 60 वर्ष की आयु में 18 जून, 2019 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 21 जून को आर्यससमाज कीर्ति नगर में सम्पन्न हुई जिसमें सभा अधिकारियों, उनके निजी परिवार, आर्यसमाज कीर्ति नगर के साथ-साथ निकटवती आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्रीमती राजेन्द्र अबरोल का निधन

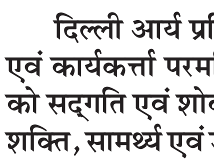

स्त्री आर्यसमाज करोल बाग नई दिल्ली की पूर्व प्रधाना श्रीमती राजेन्द्र अबरोल जी का मुम्बई में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ हुआ तथा शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा भी मुम्बई में ही सम्पन्न हुई।

श्री सुरेश आर्य का निधन

आर्यसमाज हिलसा, नालंदा के कर्मठ कार्यकर्ता श्री सुरेश आर्य जी का 10 जून 2019 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार फतुहा घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। इस अवसर पर श्री प्रेम कुमार आर्य, श्री हरिशरण दास आदि अनेक अन्य आर्यजन उपस्थित रहे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सोमवार 24 जून, 2019 से रविवार 30 जनू, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 27-28 जून, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 26 जून, 2019

मॉरीशस की धरा पर "सत्यार्थ प्रकाश मास" के रूप में विशेष महोत्सव का आयोजन

वैदिक विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार के सारगर्भित प्रवचनों की शृंखला

आर्यसमाज एक विश्वव्यापी संगठन है। भारत के कोने-कोने में और विश्व के 32 देशों में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रेरणा से आर्यजन महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाओं के माध्यम से वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। इस क्रम में आर्य प्रतिनिधि मॉरीशस द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार 'सत्यार्थ प्रकाश मास' के रूप में विशेष आयोजन किया गया। इस विशेष कार्यक्रम में आर्य समाज के सुयोग्य वैदिक विद्वान और उत्तराखंड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार जी आर्य प्रतिनिधि सभा मारीशॅस के निमंत्रण पर वहां पहुंचे। श्री विद्यालंकार जी ने एक सप्ताह के सत्यार्थ प्रकाश प्रचार अभियान में वहां एक-एक दिन में तीन-तीन, चार-चार शोधपरक प्रवचन देकर आर्यसमाज, महर्षि दयानंद और वेदों के संदेश को जन-जन तक पहुंचाया। श्री विद्यालंकार जी मॉरीशस के कई कॉलेजों में प्रवचन देने हेतु गए जिनमें ऋषि दयानंद शोध संस्थान, डी.ए.वी.कॉलेज, हिंदू गर्ल्स कॉलेज और आकाशवाणी पर भी आपके प्रवचनों की रिकार्डिंग हुई, जो कि अपने आपमें एक कीर्तिमान है। सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार के लिए आर्य सभा मॉरीशस के प्रसिद्ध शिक्षाविद् आर्य नेता, डॉ. उदयनारायण गंगू जी, श्री हरिदेव रामधनी जी, प्रधान, आर्य सभा मारीशॅस, श्री बालचंद्र तनाकुर जी, युवक संघ के अध्यक्ष श्री भूषण जी, श्री अमीचंद करीमन जी आदि महानुभावों का प्रयास प्रशंसनीय एवं विश्व स्तर पर आर्यसमाज के लिए अनुकरणीय है।

इस साप्ताहिक कार्यक्रम के दौरान डॉ. विनय विद्यालंकार जी 21 जून 2019 को आर्यसभा मॉरीशस के अधिकारियों के साथ वहां के महामहिम राष्ट्रपति श्री वाया पुरी पिल्लै जी से राष्ट्रपति भवन में शिष्टाचार भेंट करने हेतु गए। इस अवसर पर वैदिक विचारधारा के प्रसार एवं उसकी उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा हुई। योग, यज्ञ और स्वाध्याय पर भी बात हुई। सत्यार्थ प्रकाश के मासिक प्रचार कार्यक्रम की राष्ट्रपति जी ने प्रशंसा की। आर्यसभा मॉरीशस की ओर से वहां के राष्ट्रपति जी को What is in Veda's पुस्तक भेंट की। इस क्रम में 25 जून 2019 को मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त श्री तन्मय लाल जी से भी शिष्टाचार भेंट हुई। इस भेंटवार्ता में भारत और मॉरीशस के बीच सांस्कृतिक सम्बन्धों को लेकर सारगर्भित चर्चा हुई। उच्चायुक्त महोदय ने वेद के वैज्ञानिक तत्वों को युवापीढ़ी तक पहुंचाने पर बल दिया। इस अवसर पर डॉ. विद्यालंकार जी की धर्मपत्नी डॉ. वर्षा जी, पुत्री इष्टि जी व आर्य सभा मारीशॅस के उपाध्यक्ष डॉ. रवींद्र सिंह गौर जी साथ रहे।

इससे पूर्व डॉ. विनय विद्यालंकार जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसभा मॉरीशस को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली में विशेष सहयोग एवं भागीदारी के लिए स्मृति चिह्न भी भेंट किया और सम्मेलन की सफलता के लिए सभी को बधाई दी।

इस सात दिवसीय कार्यक्रम के बाद आर्य सभा मॉरीशस के अधिकारियों ने डॉ. विनय विद्यालंकार जी का धन्यवाद किया और डॉ. साहब ने वेद, दयानंद और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को नित-निरंतर आगे बढ़ाने के लिए वहां सभी उपस्थित आर्यजनों को प्रेरणा प्रदान करते हुए विदाई ली।

राष्ट्रपति श्री वाया पुरी पिल्लै जी को पुस्तक भेंट करते डॉ. विनय विद्यालंकार जी एवं आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान श्री हरिदेव रामधनी जी को सार्वदेशिक सभा की ओर से स्मृति चिह्न भेंट करते हुए।

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह